इकाई–16

संस्कृत व्याकरण– हल् सन्धि

इकाई की रूपरेखा

16.0 पृष्ठभूमि

16.0.1 सन्धि की परिभाषा

पाणिनि मुनि ने सन्धि की परि□ाषा की है– 'संहिता' अर्थात् वर्णों के अतिशय सामीप्य को संहिता कहा जाता है और संहिता ही सन्धि है। समीप में रखना ही संहिता अथवा संधि है।

संस्कृत □ाषा के वाक्य में प्रत्येक पद का अन्त किसी स्वर– व्यंजन – अनुस्वार अथवा विसर्ग से होता है। उसके आगे जब कोई अन्य शब्द आता है, तब पहले शब्द के अन्तिम वर्ण अथवा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार के परिवर्तन और मेल को सन्धि कहते हैं।

जैसा कि सन्धि का वास्तविक अर्थ है □ली प्रकार रखना अथवा मिलाना। इसे अच्छी तरह त□ी मिलाया जा सकता है जब बीच में किसी □ी प्रकार का व्यवधान न हो। अतः सन्धि के लिए दो

वर्णों का परस्पर सन्निकट होना आवश्यक है, दूरवर्ती वर्णों में सन्धि नहीं हो सकती है

16.0.2 विकार / परिवर्तन प्रकार –

जैसा कि कहा जा चुका है सन्धि करने पर विकार अर्थात् परिवर्तन होना आवश्यक है। ये परिवर्तन अनेक प्रकार से हो सकते हैं –

(1) दोनों वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण आ जाना।

यथा– रमा+ईशः = रमेशः

सदा+एव = सदैव

(2) दोनों वर्णों में से एक के स्थान पर नया वर्ण आ जाना।

यथा – इति+आदि = इत्यादि

अनु+अयः = अन्वयः

(3) दोनों वर्णों के मध्य एक नया वर्ण आ जाना।

यथा – वृक्ष+छाया = वृक्षच्छाया

एकस्मिन्+अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

(4) दोनों वर्णों का परिवर्तित हो जाना।

यथा – तत्+हितम् = तद्धितम्

वाक्+हरिः = वाग्घरिः

16.0.3 सन्धि की व्यवस्था

संस्कृत □ाषा में सन्धि करने की व्यवस्था के लिए नियम निर्धारित किये गये हैं, जिनके अनुसार कहाँ–कहाँ सन्धि करना आवश्यक है यह विचार किया गया है। इस व्यवस्था को दर्शाते हुए एक पद्य में कहा गया हैः–

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।

अर्थात् एक पद में सन्धि नित्य है, अर्थात् सन्धि करना आवश्यक है, उपसर्ग और धातु को एक साथ रखने पर सन्धि करना आवश्यक है, समस्तपद बनाने में सन्धि करना आवश्यक है, परन्तु यदि वाक्य लिखते समय दो पद अलग–अलग हैं तो उनको मिलाकर लिखना अर्थात् सन्धि करना अपनी विवक्षा अर्थात् इच्छा पर नि□र करता है।

यथा– एक पद में – ने+अनम् = नयनम् रूप से सन्धि करना आवश्यक है।

धातु और उपसर्ग में – अ□ि+आसः = अभ्यासः रूप से सन्धि करना आवश्यक है।

समास में – निः+सन्देहः = निस्सन्देहः रूप से सन्धि करना आवश्यक है, परन्तु वाक्य में सन्धि करके अथवा अलग–अलग रखकर □ी पद लिखे जा सकते हैं।

16.1 सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है–

(1) अच् सन्धि स्वर सन्धि

(2) हल् सन्धि व्यंजन सन्धि

(3) विसर्ग सन्धि

16.2 हल् (व्यंजन) सन्धि

हल् (व्यंजन) सन्धि का सामान्य परिचय –

जब दो व्यंजनों की परस्पर अत्यधिक निकटता अथवा एक स्वर और एक व्यंजन की अत्यधिक निकटता के कारण व्यंजन में विकार या परिवर्तन होता है, तब उसे हल् (व्यंजन) सन्धि कहते हैं। यथा–

सत्+चित् = सच्चित्

जगत्+ईशः = जगदीशः

16.2.1 हल् सन्धि के प्रमुख भेद –

जिस प्रकार स्वर सन्धि के □द निर्धारित किये जाते हैं, उसी प्रकार हल् (व्यंजन) सन्धि के □द निर्धारित नहीं किये जा सकते हैं, क्योंकि व्यंजन अपने निकटस्थ स्वरों तथा व्यंजनों के मेल के कारण अनेक प्रकार से परिवर्तित होते हैं। अतः व्यंजन के अनेक रूप होने के कारण हल् सन्धि के □ी अनेक □द हो सकते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख □दों का ही उल्लेख किया जावेगा।

16.3 श्चुत्व सन्धि

शकार और चवर्ग तालव्य स्थानी है। अतः दोनों को एक स्थान पर रखते हुए श्चुत्व शब्द का प्रयोग किया गया है।

16.3.1 श्चुत्व सन्धि के प्रमुख सूत्र

1. **स्तोः श्चुना श्चुः 8/4/40** – सकार अथवा तवर्ग का यदि शकार अथवा चवर्ग से योग हो तो सकार को शकार एवं तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। अर्थात् तवर्ग का जो वर्ण होगा उसको क्रम से चवर्ग का वही वर्ण हो जाएगा। (पहले का पहला, दूसरे को दूसरा आदि) उदाहरण–

   उत् + छिनः = उच्छिन्नः   तत् + छविः = तच्छविः

   सत् + चित् = सच्चित्   एतद् + जलम् = एतज्जलम्

   रामस् + शेते = रामश्शेते   रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति

2. **शात् 8/4/44** – शकार् के पश्चात् यदि तवर्ग आए तो तवर्ग को चवर्ग नहीं होगा। उदाहरण–

   प्रश् + नः = प्रश्नः   विश् + नः = विश्नः

16.3.2 श्चुत्व सन्धि के प्रमुख उदाहरणों का विग्रह एवं शब्द सिद्धि

1. **रामश्शेते** = रामस् + शेते।

   1. यहाँ रामस् के सकार का शेते के शकार से योग है– रामस्+शेते
   2. अतः 'स्तोःश्चुना श्चुः' से सकार का श् हुआ– रामश्+शेते
   3. दोनों को संयुक्त करने पर– 'रामश्शेते'

2. **रामश्चिनोति** = रामस् + चिनोति

   1. इस हल् सन्धि में सकार के बाद चिनोति का 'च' आया है– रामस्+चिनोति
   2. अतः 'स्तोः श्चुना श्चुः' से स् को श् हुआ– रामस्+चिनोति
   3. संयुक्त करने पर रूप सिद्ध हुआ– 'रामश्चिनोति'

3. **सच्चित्** = सत् + चित्

1. यहाँ सत् के तकार के बाद चित् का चकार आया है– सत्+चित्
2. अतः 'स्तोः श्चुना श्चुः' से त् को च् हुआ– सच्+चित्
3. दोनों को संयुक्त करने पर– 'सच्चित्'

4. **शर्ङिगञ्जयः** = शार्ङ्गिन् + जयः
   1. यहाँ शार्ङ्गिन् में नकार तवर्ग का अक्षर है तथा जयः में जकार चवर्ग का है– शाङ्गिन्+जयः
   2. अतः 'स्तोः श्चुना श्चुः' से नकार को चवर्ग का पंचम अक्षर 'ञ्'– शार्ङ्गिञ्+जयः
   3. दोनों को संयुक्त करने पर– 'शार्ङ्गिञ्जयः'

5. **विश्नः** = विश् + नः
   1. यहाँ शकार के बाद नकार व तवर्ग का अक्षर है– विश् + नः
   2. अतः 'स्तोः श्चुना श्चुः' से नकार का ञकार होना चाहिए। परन्तु 'शात्' सूत्र से इसका निषेध हुआ और दोनों को संयुक्त करने पर– 'विश्नः'

6. **प्रश्नः** = प्रश् + नः
   1. 'शात्' का अर्थ है शकार के पश्चात् तवर्ग के स्थान पर श्चुत्व नहीं होता– प्रश् + नः
   2. अतः यहाँ नकार को जकार न होकर वही अक्षर रहा और संयुक्त करने पर बना– 'प्रश्नः'

16.4 ष्टुत्व सन्धि–

मूर्धन्य षकार और ट वर्ग 'मूर्धा' स्थानी है। इनके साथ तालव्य का योग एवं मूर्धन्य में परिवर्तन ष्टुत्व सन्धि है।

16.4.1 ष्टुत्व सन्धि के प्रमुख सूत्र –

1. **ष्टुना ष्टुः 8/4/41**– सकार अथवा तवर्ग का यदि षकार एवं टवर्ग के साथ योग हो तो सकार को षकार एवं तवर्ग को क्रमशः टवर्ग हो जाता है। अर्थात् तवर्ग का जो वर्ण हो, उसको क्रम से टवर्ग का वही वर्ण हो जाएगा। उदाहरण –

   तत् + टीका = तट्टीका उद् + डीनः = उड्डीनः
   रामस् + षष्ठः = रामष्षठः रामस् + टीकते = रामष्टीकते
   दुष् + तः = दुष्टः षष् + थः = षष्ठः
   पेष् + ता = पेष्टा विष् + नुः = विष्णुः

2. **न पदान्ताट्टोरनाम् 8/4/42** – पदान्त टवर्ग से परे सकार या तवर्ग आने पर षकार और टवर्ग नहीं होता, नाम को छोड़कर। उदाहरण–

   षट् + सन्तः = षट्सन्तः; षट् + ते = षट्ते

3. **अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम् (वार्तिक)** – पदान्त टवर्ग से परे नाम् नवति और नगरी शब्द आने पर तवर्ग को टवर्ग (न् को ण्) हो जाता है। उदाहरण –

षट् + नवति = षण्णवतिः;   षट् + नगरी = षण्णगरी

4. **तोः षिः 8/4/43**– यदि तवर्ग के पश्चात् षकार आये तो तवर्ग को टवर्ग नहीं होता है। उदाहरण–   सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः

16.4.2 ष्टुत्व सन्धि के प्रमुख उदाहरणों का विग्रह एवं शब्द सिद्धिः–

1. **रामष्षष्ठः = रामस् + षष्ठः**
   1. यहाँ रामस् में सकार के बाद षष्ठ का ष है– रामस् + षष्ठः
   2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से स् को ष् हुआ– रामष् + षष्ठः
   3. संयुक्त करने पर बना– 'रामष्षष्ठः'
2. **रामष्टीकते = रामस् + टीकते**
   1. यहाँ रामस् में सकार के बाद टीकते का टकार है– रामस् + टीकते
   2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से स् को ष् हुआ– रामष् + टीकते
   3. दोनों को संयुक्त करने पर बना– 'रामष्टीकते'
3. **पेष्टा = पेष् + ता**
   1. यहाँ पेष् में षकार के बाद ता तवर्ग का अक्षर आया है– पेष् + ता
   2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से ता को टा हुआ– पेष् + टा
   3. संयुक्त करने पर रूप सिद्ध हुआ– 'पेष्टा'
4. **तट्टीका = तत् + टीका**
   1. यहाँ तत् में तकार के बाद टीका में टकार का योग है– तत् + टीका
   2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से तत के तकार को टकार हुआ– तट् + टीका
   3. संयुक्त करने पर – 'तट्टीका'
5. **चक्रिण्ढौकसे = चक्रिन् + ढौकसे**
   1. यहाँ चक्रिन में नकार तवर्ग का तथा ढौकसे में ढकार टवर्ग का है– चक्रिन् + ढौकसे
   2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से ढकार के कारण नकार को टवर्ग का पंचम अक्षर णकार हुआ– चक्रिण् + ढौकसे
   3. संयुक्त करने पर बना– 'चक्रिण्ढौकसे'
6. **षट्सन्तः = षड् + सन्तः**
   1. यहाँ षड् में ड् टकार का वर्ण है और सन्तः में स तालव्य का वर्ण है– षड् + सन्तः
   2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से सकार का षकार होना चाहिए। परन्तु 'नपदान्ताट्टोरनाम्' से इसका निषेध हुआ– षड् + सन्तः
   3. फिर 'खरि च' से डकार को टकार हुआ– षट् + सन्तः
   4. अन्त में दोनों को संयुक्त करने पर – 'षट्सन्तः'
7. **षट्ते = षड् + ते**
   1. यहाँ षड् में डकार टवर्ग का है तथा उसके परे त तवर्ग का अक्षर है–

षड् + ते

2. ष्टुना ष्टुः से तकार को टकार होना चाहिये था — षड्+ते
3. परन्तु 'न पदान्ताट्टोरनाम्' से ते को ट् नहीं हुआ– — षड् + ते
4. यहाँ 'खरि च' से तकार के कारण ड् को ट् हुआ– — षट् + ते
5. संयुक्त करने पर बना– — 'षट्ते'

8. ईट्टे = ईट् + ते

1. यहाँ टवर्गस्थ टकार के पश्चात् तकार आया है– — ईट् + ते
2. यहाँ टकार पदान्त में नहीं होने के कारण 'न पदान्ताट्टोरनाम्' सूत्र नहीं लगेगा– — ईट् + ते
3. यहाँ 'ष्टुना ष्टुः' से ते के तकार को टकार हुआ– — ईट् + टे
4. संयुक्त करने पर – — 'ईट्टे'

9. सर्पिष्टमम् = सर्पिष् + तमम्

1. यहाँ षकार के पश्चात् तकार आया है– — सर्पिष् + तमम्
2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से तकार को टकार हुआ– — सर्पिष् + टमम्
3. अब इनको संयुक्त करने पर रूप बना– — 'सर्पिष्टमम्'

10. षण्णाम् = षड् + नाम्

1. यहाँ टवर्गस्थ डकार के पश्चात् नाम का नकार है– — षड् + नाम्
2. 'अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्' वार्तिक से नकार को णकार होकर ना को णा हुआ– — षड् + णाम्
3. तब 'प्रत्यये □ाषायां नित्यम्' से ड को ण हुआ– — षण् + नाम्
4. संयुक्त करने पर बना– — 'षण्णाम्'

11. षण्णवतिः = षड् + नवतिः

1. यहाँ षड् में टवर्ग से परे नवतिः का नकार है– — षड् + नवतिः
2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से नवतिः के न को ण हुआ– — षड् + णवतिः
3. फिर 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' से डकार को विकल्प से णकार हुआ– — षण् +णवतिः
4. संयुक्त करने पर – — 'षण्णवतिः'

12. षण्णगर्यः = षड् + नगर्यः

1. षड् में टवर्ग से परे नगर्यः का नकार है– — षड्+ नगर्यः
2. 'ष्टुना ष्टुः' से नकार को णकार हुआ– — षड् + णगर्यः
3. ''यरोऽनुनासिके' से डकार को णकार हुआ– — षण् + णगर्यः:
4. संयुक्त करने पर रूप बना– 'षण्णगर्यः' रूप सिद्ध हुआ।
5. विकल्प के कारण ड् को ण् नहीं करने पर– 'षड्णगर्यः' रूप □ी बनता है।

13. सन्षष्टः = सन् + षष्ठः

1. यहाँ षकार के योग में नकार प्राप्त हो रहा है– — सन् + षष्ठः

2. अतः 'ष्टुना ष्टुः' से न् को ण् होना चाहिए था, किन्तु 'तोःषि' से इसका निषेध हुआ— सन् + षष्ठः

3. और संयुक्त करने पर बना— 'सन्षष्ठः'

16.5 जश्त्व सन्धि

माहेश्वर सूत्र में जश् प्रत्याहार वर्गों के तृतीय वर्णों के लिए आया है। अतः वर्गों के अन्य वर्णों का तृतीय वर्ण रूप में परिवर्तित हो जाना 'जशत्व' सन्धि कहलाता है।

16.5.1 जश्त्व सन्धि के आवश्यक सूत्र—

1. **झलां जशोऽन्ते 8/2/39** — यदि पद के अन्त में झल् (य्, व्, र् ल्, ञ्, म्, ङ्, ण् न् को छोड़ अन्य कोई □ी व्यंजन) आए तो उसे जश् (ज्, ब् ग् ड् द्) हो जाता है अर्थात् यदि किसी पद के अन्त में वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व्यंजन अथवा श् ष् स् ह् आए तो उन्हें अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। उदाहरण —

वाक् + ईशः = वागीशः दिक् + अन्तः = दिगन्तः

वाक् + दानम् = वाग्दानम् अच् + अन्तः = अजन्तः

षट् + एव = षडेव षट् + आननः = षडाननः

चित् + आनन्दः = चिदानन्दः सत् + आचारः = सदाचारः

अप् + जम् = अब्जम् सुप् + अन्तः = सुबन्तः

2. **झलां जश् झशि 8/4/53** — यदि झल् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श्, ष्, स् ह्) से परे झश् (वर्गों के तृतीय चतुर्थ वर्ण) आएँ तो उसे अपने ही वर्ग का जश् (वर्ग का तृतीय वर्ण) हो जाता है। (सन्धि का यह नियम प्रायः अपदान्त वर्णों में ही लगता है।) उदाहरण—

दुघ् + धम् = दुग्धम् दघ् + धः = दग्धः

शुध् + धिः = शुद्धिः युध् + धः = युद्ध

ल□् + धः = लब्धः क्षु□् + धः = क्षुब्धः

3. **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा 8/4/45** — पदान्त यर् (ह् को छोड़ कर शेष व्यंजन) के पश्चात् यदि अनुनासिक (वर्ग का पंचम वर्ण) आए तो यर् को अपने वर्ग का पंचम वर्ण विकल्प से हो जाता है। उदाहरण —

सद् + मतिः = सन्मतिः या सद्मतिः

तत् + मरणम् = तन्मरणम् या तद्मरणम्

षट् + मुखः = षण्मुखः या षड्मुखः

4. **प्रत्यये भाषायां नित्यम् (वार्तिक)** — पदान्त यर् के पश्चात् यदि किसी प्रत्यय का अनुनासिक वर्ण आए तो यर् के स्थान पर नित्य अनुनासिक होगा, विकल्प से नहीं। उदाहरण—

तत् + मात्रम् = तन्मात्रम् वाक् + मयम् = वाङ्मयम्

चित् + मयम् = चिन्मयम् दिक् + मात्रम् = दिङ्मात्रम्

5. **तोर्लि 8/4/60** — यदि तवर्ग के पश्चात् ल आए तो तवर्ग को □ी ल हो जाता है। (न् से परे ल आने पर न् को अनुनासिक ल (लँ) होता है।) उदाहरण—

तत् + लीनः = तल्लीनः　　　　　उद् + लेखः = उल्लेखः

विद्वान् + लिखनि = विद्वाँल्लिखति　　　महान् + ला□ः = महाँल्ला□ः

6. **उदःस्थास्तम्भोः पूर्वस्य 8/4/61**– उद् के पश्चात् स्था एवं स्तम□ धातु आने पर पूर्व सवर्ण हो जाता है। अर्थात् दोनों धातुओं के स् को थ् हो जाता है। उदाहरण–

उद् + स्थानम् = उद् + थ्थानमः　　　　उद् + स्तम□नम् = उद् + थ्तम□नम्

7. **झरो झरि सवर्णे 8/4/65** – यदि व्यंजन के पश्चात् झर् (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श् ष् स्) आए और उससे परे सवर्ण (समान अक्षर) झर् आए तो पूर्व झर् का विकल्प से लोप हो जाता है।

उद् + थ्थानम् = उद्+थानम्, उद् + थ्थानमः – दोनों रूप बनते हैं

उद् + थ्तम□नम् = उद्+तम□नम्, उद + थ्तम□नम् – दोनों रूप बनते हैं

रुन्ध् + धः = रुन्द्धः

8. **खरि च 8/4/55** – यदि झल् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श्, ष् स् ह्) के पश्चात् खर् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण एवं श् ष् ह्) आए तो झल् को चर् (अपने वर्ग का प्रथम वर्ण) हो जाता है उदाहरण–

उद् + थानम् = उत्थानम्　　　　　उद् + थ्थानम् = उत्थ्थानम्

उद् + तम□नम् = उत्तम□नम्　　　　उद् + थ्तम□नम् = उत्थ्तम□नम्

उद् + थापकः = उत्थापकः　　　　　सद् + कारः = सत्कारः

दिग् + पालः = दिक्पालः

9. **झयो होऽन्यतरस्याम् 8/4/62** – यदि झय् (पंचम वर्ण को छोड़कर वर्गों के अन्य वर्ण) के पश्चात ह आए तो ह को विकल्प से पूर्व सवर्ण हो जाता है । अर्थात् ह को पूर्व वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण (घ् झ, ढ् ध्, □) हो जाता है। (और पूर्व वर्ण को झलां जशोऽन्ते सूत्र से अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। उदाहरण –

वाक् + हरिः = वाग्घरिः, वाग्हरिः　　　तत् + हितम् = तद्धितम्, तद्हितम्

उत् + हरणम = उद्धरणम्, उद्हरणम्

10. **शश्छोऽटि 8/4/63** – यदि झय् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ वर्ण) के पश्चात् श् आए और श् के पश्चात् अट् (सारे स्वर ह्, य् व् र् वर्ण) हो तो श् को विकल्प से छ् हो जाता है। उदाहरण–

तद् + शिवः = (स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से द् को ज् परिवर्तन)

तज् + शिवः = (खरि च सूत्र से ज् को च् परिवर्तन)

तच् + शिवः = तच्छिवः, तच्शिवः –दोनों रूप बनते हैं।

16.5.2 जश्त्व सन्धि के प्रमुख उदाहरणों का विग्रह एवं शब्द सिद्धिः–

1. **वागीशः = वाक् + ईशः**

1.	पदान्त में झल् अर्थात् ककार है–	वाक् + ईशः
2.	'झलां जशोऽन्ते' से जश् अर्थात् क् का ग् हुआ–	वाग् + ईशः
3.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'वागीशः'

2. **एतन्मुरारिः = एतद् + मुरारिः**

1.	यहाँ पदान्त तवर्गस्थ दकार के बाद मकार आया है–	एतद् + मुरारिः
2.	'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' सूत्र से दकार के स्थान पर अनुनासिक अर्थात् नकार हुआ–	एतन् + मुरारिः
3.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'एतन्मुरारिः
4.	यह अनुनासिक आदेश विकल्प से ही होता है, अतः ग पर अनुनासिक अर्थात् नकार हुआ–	'एतद्मुरारिः'

3. तन्मात्रम् = तद् + मात्रम्

1.	पदान्त में तवर्गस्थ दकार के पश्चात् मकरादि प्रत्यय पर अनुनासिक अर्थात् नकार हुआ–	तद् + मात्रम्
2.	अतः 'प्रत्यये □ाषायां नित्यम्' वार्तिक से नित्य अनुनासिक आदेश अर्थात् नकार हुआ–	तन् + मात्रम्
3.	संयुक्त करने पर –	'तन्मात्रम्'

4. चिन्मयम् = चित् + मयम्

1.	यहाँ पदान्त तवर्गस्थ दकार के पश्चात् मकारादि प्रत्यय 'मयट्' आया है–	चिद्+ मयम्
2.	'प्रत्यये □ाषायां नित्यम्' वार्तिक से नित्य अनुनासिक प्रत्यय 'मयट्' आया है–	चिन्+मयम्
3.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'चिन्मयम्'

5. तल्लयः = तद् + लयः

1.	यहाँ तवर्गस्थ दकार के बाद लकार आया है–	तद् + लयः
2.	अतः 'तोर्लि' सूत्र से द् को ल् हुआ–	तल् + लय्
3.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'तल्लयः'

6. विद्वाँल्लिखतिः = विद्वान् + लिखति

1.	यहाँ तवर्ग के नकार के बाद लिखति का लकार है–	विद्वान्+लिखति
2.	'तोर्लि'सूत्र से नकार के स्थान पर अनुनासिक लकार हुआ	विद्वाँल्+लिखति
3.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'विद्वाँल्लिखति'

7. उत्थानम् = उद् + स्थानम्

1.	यहाँ उद् उपसर्ग के बाद स्था धातु का शब्द स्थानम् है–	उद्+ स्थानम्
2.	उदः स्थास्तम्□ोः पूर्वस्य' से सकार को पूर्व का सवर्ण थ् आदेश हुआ–	उद्+थ्थानम्
3.	'झरो झरि सवर्णे' से प्रथम थ् का विकल्प से लोप–	उद्+थानम्
4.	'खरि च' से दकार के स्थान पर चर् (तकार) हुआ–	उत् थानम्
5.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'उत्थानम्'
6.	जहाँ थकार लोप पक्ष का अ□ाव होगा, वहाँ बनेगा–	'उत्थ्थानम्'

8. उत्तम्भनम् = उद् + स्तम्भनम्

1. उद् के बाद स्तम□् धातु का स्तम□नम् शब्द आया है– उद् + स्तम□नम्
2. 'उदः स्थास्तम□ोः पूर्वस्यः से सकार को पूर्व का थ् आदेश हुआ– उद्+थ्तम□नम्
3. 'झरो झरि सवर्णे' से थकार का विकल्प से लोप– उद्+तम□नम्
4. 'खरि च' से दकार के स्थान पर तकार– उत् तम□नम्
5. संयुक्त करने पर रूप बना– 'उत्तम□नम्'
6. थकार का लोप न करने पर– 'उत्थ्तम□नम्'

9. वाग्घरिः = वाग् + हरिः

1. वाग् में गकार के बाद हरिः में हकार का योग है– वाग् + हरिः
2. झयो होऽन्यतरस्याम् से तृतीण वर्ण के बाद हकार को विकल्प से पूर्व वर्ण का सवर्ण होता है– वाग् + हरिः
3. स्थानेऽन्तरतमः से ह के स्थान पर घ हुआ– वाग् + घरिः
4. संयुक्त करने पर रूप बना– 'वाग्घरिः'
5. विकल्प होने के कारण घकार के अ□ाव में हकार रहा– 'वाग्हरिः'

10. तच्छिवः = तद् + शिवः

1. उद् में दकार के बाद शिवः के शकार का योग है– तद् + शिवः
2. 'स्तोः श्चुना श्चुः' से दकार को जकार हुआ तज् + शिवः
3. 'खरि च' से जकार को चकार हुआ' तच् + शिवः
4. 'शश्छोऽटि' से शकार के स्थान पर छकार– तच् + छिवः
5. संयुक्त करने पर रूप बना– 'तच्छिवः'
6. छकार विकल्प से होने के कारण दूसरा रूप बना– 'तच्शिवः'

11. तच्छ्लोकेन = तद् + श्लोकेन

1. यहाँ दकार के पश्चात् शकार का योग है– तद् + श्लोकेन
2. 'स्तोः श्चुना श्चुः' से द् को ज् हुआ– तज् + श्लोकेन
3. 'खरि च' से ज् को च् हुआ– तच् + श्लोकेन
4. छत्वममीति वाच्यम्' वार्तिक से श् को छ्– तच् छ्लोकेन
5. संयुक्त करने पर रूप बना– 'तच्छ्लोकेन'
6. छकारादेश के अ□ाव में पक्ष रूप होगा– 'तच्श्लोकेन'

16.6 अनुस्वार सन्धि

माहेश्वर सूत्र में आये वर्गों के पंचम वर्णों की आनुनासिक संज्ञा हुई है तथा उन आनुनासिक वर्णों का अन्य वर्णों के प्र□ाव से अथवा पदान्त आदि परिस्थितियों में अनुस्वार अथवा पुनः आनुनासिक बना देने की प्रक्रिया अनुस्वार सन्धि कहलाती है।

16.6.1 अनुस्वार सन्धि के प्रमुख सूत्र–

1. **मोऽनुस्वारः 8/3/23** – यदि पदान्त म् के पश्चात् व्यंजन वर्ण आए तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है। उदाहरण –

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे　　　　　कार्यम् + कुरु = कार्यं कुरु

ईश्वरम् + □जति = ईश्वरं □जति　　　　गृहम् + गच्छति = गृहं गच्छति

2. **नश्चापदान्तस्य झलि 8/3/24**– अपदान्त म् अथवा न् के पश्चात् यदि झल् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण एवं श्, ष्, स्, ह्द्ध आए तो म् अथवा न् को अनुस्वार हो जाता है। उदाहरण–

रम् + स्यते　रंस्यते　　　　　आक्रम् + स्यते　आक्रंस्यते

दन् + शनम्　दंशनम्　　　　　यशान् + सि　यशांसि

3. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः 8/4/58– पद के मध्य में स्थित अनुस्वार के पश्चात् यदि यय् (श् ष् स्, ह् के अतिरिक्त अन्य कोई □ी व्यंजनद्ध आए तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है। अर्थात् अनुस्वार के पश्चात् जिस वर्ग का वर्ण है, अनुस्वार के स्थान पर उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है उदाहरण –

कुम् + ठितः　कुं+ ठितः　कुण्ठितः

शम् + कितः　शं + कितः　शंङ्कितः

अम् + चितः　अं + चितः　अंञ्चितः

गुम् + फितः　गुं + फितः　गुम्फितः

4. वा पदान्तस्य 8/4/59– पदान्त अनुस्वार के पश्चात् यय् (श्, ष्, स् ह् के अतिरिक्त अन्य कोई □ी व्यंजनद्ध आए तो अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होता है। अर्थात् अनुस्वार के पश्चात् जिस वर्ग का वर्ण है, अनुस्वार के स्थान पर उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। उदाहरण–

त्वम्+करोषि　(मोऽनुस्वारः से म् को अनुस्वारद्ध त्वं+ करोषि　त्वङ्करोषि, त्वं करोषि

अन्नम् + चर्वति　अन्नं चर्वति　अन्नञ्चर्वति, अन्नं चर्वति

अहम् + पचामि　अहं + पचामि　अहम्पचामि, अहं पचामि

5. मो राजि समः क्वौ 8/3/25– सम् के पश्चात् क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु आने पर सम् के म् को म् ही रहता है। अनुस्वार नहीं होता।

6. आद्यन्तौ टकितौ– जब किसी धातु अथवा प्रत्यय को 'टित्' प्रत्यय (जिस प्रत्यय में ट् की इत्संज्ञा और लोप होता हैद्ध का आगम होता है तो वह टित् प्रत्यय उस पूर्व स्थित प्रत्यय अथवा धातु से पहले लगाया जाता है और 'कित्' प्रत्यय (क् की इत्संज्ञा वाला प्रत्ययद्ध बाद में लगाया जाता है।

यथा– अट् + गम् । आन् + मुक्

यहाँ अट् टित् है अतः गम् धातु से पहले आया है और मुक् कित् है अतः आन् के बाद में आया है।

7. ङःसि धुट्– यदि ड के पश्चात् स् आवे तो दोनों के मध्य में विकल्प से 'धुट्' का आगम होता है।

यथा –　षड् + सन्तः

　　　　षट् + सन्तः

　　　　षट् + धुट् + सन्तः　षट्त्सन्तः

8. **नश्च 8/3/30** – यदि न् के पश्चात् स् आए तो दोनों के मध्य विकल्प से ध् जुड़

जाता है। उदाहरण–

सन् + सः = सन्त्सः, सन्त्स

9. **शि तुक् 8/3/31** – यदि पदान्त न् के पश्चात् श् आए तो दोनों के मध्य विकल्प से त् (तुक् आगमद्ध जुड़ जाता है। उदाहरण–

सन् + शम्□ुः = सन् + त + शम्□ुः = (स्तोः श्चुना श्चुः से त् को च् एवं न् को ण् तथा शश्छोऽटि सूत्र से श् को छ) = सच्ञ्छम्□ुः

सन् + शम्□ुः = सञ्छम्□ुः, सञ्शम्□ुः

10. **ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् 8/3/32** – यदि पदान्त ङम् (ङ्, ण् न्) से पूर्व कोई ह्रस्व स्वर हो और पश्चात् कोई □ी स्वर हो तो ङम् को द्वित्व (ङुट्, णुट्, नुट् आगम) हो जाता है। उदाहरण–

तिङ् + अतिङ् = तिङ + ङ् + अतिङ्   तिङ्ङतिङ्

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा

सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः   तस्मिन् + इति = तस्मन्निति

पठन् + एति = पठन्नेति   सन् + अच्युतः = सन्नच्युतः

11. **समः सुटि 8/3/5** – सुट् परे रहने पर सम् के म् को र् (रु) हो जाता है–

सम् + स् करोति = सर् स् करोति

12. **अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा 8/3/2** – इस रु प्रकरण में रु (र्) से पूर्व वर्ण को विकल्प से अनुनासिक होता है; सँर् स् करोति।

13. **अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः 8/3/4** – अनुनासिक के विकल्प में रु (र्) से पूर्व वर्ण को अनुस्वार होता है– सर् स् करोति– सँ र् स् करोति, सं र् स् करोति

14. **खरवसानयोर्विजसर्जनीयः 8/3/16** – यदि अवसान में र् आए अथवा र् से परे खर् (वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण एवं श् ष् स्) आए तो दोनों स्थिति में र् को विसर्ग हो जाता है। सँर् स् करोति, संर् स् करोति – सँःस्करोतिः, संःकरोति

15. **पुमः खय्यम्परे** – अम् परक खय् से परे पुम् के म् को रु हो जाता है।

यथाः– पुम् + कोकिलः

पुरु + कोकिलः

16. **नश्छव्यप्रशान्** – अम् परक छव् (छ ठ थ च ट त) से परे नकारान्त पद को रु होता है, परन्तु प्रशान् के न् को रु नहीं होता।

17. **विसर्जनीयस्य सः** – विसर्ग से परे यदि खर् हो तो विसर्ग का स् हो जाता है।

यथा – बालः + तिष्ठति = बालस्तिष्ठति।

18. **तस्य परमाम्रेडितम्** – द्विरुक्ति अर्थात् दो बार उच्चारित करने की आम्रेडित संज्ञा होती है।

19. **कानाम्रेडिते 8/3/12**– यदि कान् के पश्चात् कान् आए तो पूर्व कान् के न् को स् हो जाता है और उसके पहले अनुनासिक अथवा अनुस्वार जुड़ जाता है। उदाहरण–

कान् + कान् = काँस्कान्, कांस्कान्

20. **छे च 6/1/72** – यदि ह्रस्व स्वर के पश्चात् छ आए तो ह्रस्व स्वर के आगे त् (तुक

आगम) जुड़ जाता है। उदाहरण–

शिव + छाया = शिव त् छाया = (स्तोः श्चुना श्चुः से त् को च्) शिवच्छाया । वृक्ष + छाया = वृक्ष त् छाया = वृक्ष च् छाया = वृक्षच्छाया

21. **पदान्ताद्वा 6/1/75** – यदि पदान्त दीर्घ स्वर के पश्चात् छ आए तो पदान्त दीर्घ स्वर को विकल्प से त् (तुक आगम) जुड़ता है। उदाहरण –

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया

नदी + छन्ना = नदीच्छन्ना, नदीच्छाया

16.6.2 अनुस्वार संधि में विभिन्न पदों का सन्धि विच्छेद एवं शब्द सिद्धि

1. हरिं वन्दे = हरिम् + वन्दे

1.	हरिम् में पदान्त मकार के बाद व्यंजन 'व' है–	हरिम् + वन्दे
2.	'मोऽनुस्वारः' से मकार के स्थान पर अनुस्वार हुआ–	हरिं वन्दे'

2. यशांसि = यशान् + सि

1.	यहाँ अपदान्त नकार के बाद झल् (स्) है–	यशान् + सि
2.	'नश्चापदान्तस्य झलि' से न् को अनुस्वार–	यशां + सि
3.	संयुक्त करने पर शब्द सिद्ध हुआ–	'यशांसि'

3. आक्रंस्यते = आक्रम् + स्यते

1.	यहाँ अपदान्त नकार के बाद सकार (झल्) है–	आक्रम् + स्यते
2.	'नश्चापदान्तस्य झलि' से म् को अनुस्वार–	आक्रं + स्यते
3.	संयुक्त करने पर शब्द सिद्ध हुआ–	'आक्रंस्यते'

4. मन्यते = मन् + यते

1.	मन् में अपदान्त नकार तो है, किंतु उसके बाद झल् प्रत्याहार का वर्ण नहीं है–	मन् + यते
2.	अतः 'नश्चापदान्तस्य झलि' से नकार को अनुस्वार नहीं हुआ–	'मन्यते'

5. शान्तः = शाम् + तः

1.	यहाँ मकार के पश्चात् तकार का योग है–	शाम् + तः
2.	'नश्चापदान्तस्य झलि' से मकार को अनुस्वार–	शां + तः
3.	'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से अनुस्वार को नकार–	शान् + तः
4.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'शान्तः'

6. त्वङ्करोषि = त्वम् + करोषि

1.	यहाँ मकार के पश्चात् ककार (व्यंजन) का योग है–	त्वम् + करोषि
2.	'मोऽनुस्वारः' से मकार का अनुस्वार–	त्वं + करोषि
3.	'वा पदान्तस्य' से अनुस्वार को ङकार–	त्वङ् + करोषि
4.	संयुक्त करने पर–	'त्वङ्करोषि'

7. सम्राट् = सम् + राट्

1. सम् के बाद क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु का राट् रूप है– सम् + राट्
2. यहाँ 'मोऽनुस्वारः से मकार को अनुस्वार होना चाहिए– सम् + राट्
3. किन्तु 'मो राजि समः क्वौ' से म् का अनुस्वार नहीं– सम् + राट्
4. अतः मकार ही रहने पर संयुक्त किया– 'सम्राट्'

8. किम् ह्मयलयति = किम् + ह्मलयति

1. मकार के बाद हकार और उसके बाद मकार □ी है– किम् + ह्मलयति
2. 'हे मपरे वा' से मकार को मकार ही रहा– किम् + ह्मलयति
3. संयुक्त करने पर – 'किम्ह्मलयति'
4. दूसरे पक्ष में 'मोऽनुस्वारः' से मकार को अनुस्वार– किं ह्मलयति'

9. कियँ ह्यः = किम् + ह्यः

1. मकार के बाद हकार और उसके बाद □ी यकार है– किम् + ह्यः
2. 'यवलपरे यवला वा' वार्तिक से मकार के स्थान पर अनुनासिक 'यँ' – कियँ+ ह्यः
3. संयुक्त करने पर– 'कियँ+ह्यः'
4. 'मोऽनुस्वारः' से किम् के म् को अनुस्वार– किं + ह्यः
5. संयुक्त करने पर– 'किंह्यः'

10. किवँ ह्वलयति = किम् + ह्वलयति

1. मकार के बाद वकार परक हकार विद्यमान है– किम्+ ह्वलयति
2. 'यवलपरे यवला वा' वार्तिक के अनुसार अनुस्वार मकार के स्थान पर अनुनासिक वँ' किवँ + ह्वलयति
3. संयुक्त करने पर– 'किवँ ह्वलयति'
4. 'मोऽनुस्वारः' से मकार को अनुस्वार– 'किं ह्वलयति'
5. संयुक्त करने पर– 'किं ह्वलयति'

11. किलँ ह्लादयति = किम् + ह्लादयति

1. मकार के बाद लकार परक हकार होने पर – किम्+ ह्लादयति
2. 'यवलरपरे' वार्तिक से मकार को अनुनासिक लँ– किलँ+ ह्लादयति
3. संयुक्त करने पर– 'किलँ ह्लादयति'
4. 'मोऽनुस्वारः' से किम् के मकार को अनुस्वार– 'किं ह्लादयति'
5. संयुक्त करने पर– 'किं ह्लादयति'

12. किन्ह्तुते = किम् + हनुते

1. मकार के बाद नपरक हकार का संयोग है– किम्+ ह्नुते
2. 'नपरे नः' से मकार के स्थान पर नकार– किम् + ह्नुते
3. संयुक्त करने पर– 'किह्नुते'

4. 'मोऽनुस्वारः' से किम् के म् को अनुस्वार– 'किं + ह्नुते

5. संयुक्त करने पर– 'किंह्नुते'

13. षट्त्सन्तः = षड् + सन्तः

1.	यहाँ डकार के पश्चात् सकार का योग है–	षड्+ सन्तः
2.	'ड:सि धुट्' से धुट् का आगम–	षड्+ धुट्+ सन्तः
3.	धुट् में धकार एवं टकार की इत्संज्ञा का लोप–	षड्+ध् + सन्तः
4.	'खरि च' से धकार को तकार–	षड् + ध्+ सन्तः
5.	पुनः 'खरि च' से डकार को टकार–	षट्+त्+सन्तः
6.	संयुक्त करने पर रूप सिद्ध हुआ–	'षट्त्सन्तः'
7.	धुट् का आगम विकल्प से होने पर अ□ाव पक्ष में–	षड्+सन्तः
8.	'खरि च' से ड् को ट् हुआ–	षट्+सन्तः
9.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'षट्सन्तः'

14. प्राङ्ख् = षष्ठः प्राङ् + षष्ठः

1.	प्राङ् में ङकार के बाद षष्ठः का षकार है–	प्राङ्+ षष्ठः
2.	'ङ्णोः कुक् टुक् शरि' से ङ् के बाद कुक्–	प्राङ्+कुक्+षष्ठ
3.	कुक् में उकार तथा ककार की इत्संज्ञा–	प्राङ्+क्+षष्ठः
4.	'आद्यन्तौ टकितौ' से ककार ङकार का अन्तवयव बना–	प्राङक् + षष्ठः
5.	'चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् वार्तिक से चर् (क) को द्वितीय वर्ण (खर्) आदेश–	प्राङ्ख् +षष्ठः
6.	संयुक्त करने पर प्रथम रूप बना–	'प्राङ्ख् षष्ठः'
7.	विकल्प के अ□ाव में द्वितीय रूप बना–	'प्राङ्क् षष्ठः' या 'प्राङ्क्षष्ठः'
8.	वैकल्पिक कुक् के अ□ाव में तृतीय रूप बना–	'प्राङ षष्ठ::'

15. सुगण्ठ् षष्ठः = सुगण् + षष्ठः

1.	सुगण् में णकार के बाद षष्ठ का षकार है–	सुगण्+ षष्ठः
2.	'ङ्णोः कुक् टुक् शरि' से ण् के बाद टुक्	सुगण्+टुक्+षष्ठः
3.	टुक् में उकार व ककार की इत्संज्ञा–	सुगण्+ट्+षष्ठः
4.	'आद्यान्तौ' टकितौ से टकार ङकार का अन्त अवयव–	सुगण्ट् +षष्ठः
5.	'चयो द्वितीया' वार्तिक से टकार को ठ् (द्वितीय वर्ण)–	सुगण्ठ् + षष्ठः
6.	संयुक्त करने पर–	'सुगण्ठ् षष्ठः'
7.	विकल्प के अ□ाव में–	'सुगण् षष्ठः'
8.	पुनः विकल्प के अ□ाव में–	'सुगण्ट् षष्ठः'

16. सन्त्सः सः = सन् + सः

1.	यहाँ नकार के पश्चात् सकार आया है–	सन्+ सः
2.	अतः 'नश्च' सूत्र से सकार को धुट् हुआ–	सन्+धुट्: + सः

3.	धुट् में अन्य वर्णों का लोप होकर ध् शेष रहा–	सन्+ध्+सः
4.	'आद्यन्तो टकितौ' से धुट् सकार का आद्य अवयव–	सन्+ध + सः
5.	'खरि च' से ध् तो त् हुआ–	सन् + त्+ सः
6.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'सन्त्सः'
7.	धुट् के अ□ाव में रूप बना–	'सन्सः'

17. सञ्शम्भुः, सञ्छम्भुः, सञ्च्छ्म्भुः, सञ्च्शम्भुः = सन् + शम्□ुः

1.	उपर्युक्त सन्धि विच्छेद के 4 रूप बनेंगे–	
2.	यहाँ नकार (न्) के बाद शकार(श) का योग है–	सन्+ शम्□ुः
3.	'शि तुक्' सूत्र से तुक् का आगम हुआ–	सन्+तुक्+शम्□ुः
4.	तुक् में तकार (त्) शेष रहा–	सन्+त्+शम्□ुः
5.	'स्तोः श्चुना श्चुः' से तकार को चकार हुआ–	सन्+च्+शम्□ुः
6.	पुनः 'स्तोः श्चुना श्चुः' से नकार कोञकार हुआ–	सञ्+च्+छम्□ुः
7.	'शश्छोऽटि' से विकल्प से शकार को छकार हुआ–	सञ्+च्+छम्□ुः
8.	संयुक्त करने पर	सञ्च्छम्□ुः
9.	'झरो झरि सवर्णे' से विकल्प करके चकार का लोप–	सञ्+शम्□ुः
10	अब संयुक्त करने पर–	'सञ्शम्□ुः'
11.	तुक् के अ□ाव में–	'सञ्छम्□ुः'
12.	छकार के अ□ाव में–	'सञ्च्शम्□ुः'

18. प्रत्यङ्ङात्मा = प्रत्यङ् + आत्मा

1.	यहाँ यकारोत्तरवर्ती ह्रस्व अकार के पश्चात् पदान्त ङकार है और उसके बाद अच् 'आ' है–	प्रत्यङ्+ आत्मा
2.	अतः 'ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्' से आ को ङमुट् हुआ–	प्रत्यङ्+ङमुट्+आत्मा
3.	'यथासंख्यम्' परि□ाषा से ङकार के पश्चात् स्वर को ङुट् हुआ–	प्रत्यङ्+ङूं+आत्मा
4.	ङमुट् में 'ङ्' शेष रहा–	प्रत्यङ्+ङ्+आत्मा
5.	संयुक्त करने पर रूप बना–	'प्रत्यङ्ङात्मा'

19. सुगण्णीशः = सुगण्+ ईशः

1.	यहाँ गकार में ह्रस्व अ के बाद पदान्त णकार है और उसके बाद 'ई' स्वर (अच्) है–	सुगण्+ ईशः
2.	अतः 'ङमो ह्रस्वा' सूत्र से ई को णुट् हुआ–	सुगण्+णुट्+ईशः
3.	'यथासंख्यम्' से णकार के बाद स्वर को णुट् हुआ–	सुगण्+णुट्+ईशः
4.	णुट् में से ण् शेष रहा–	सुगण्+ण्+ ईशः
5.	संयुक्त करने पर रूप सिद्ध हुआ–	'सुगण्णीशः'

20. सन्नच्युतः = सन् + अच्युतः

1. यहाँ सकार में ह्रस्व अ के बाद पदान्त नकार है और उसके बाद स्वर 'अ' है— सन्+अच्युतः
2. 'अतः 'ङमो ह्रस्वा' से अकार को ङमुट् हुआ— सन्+ङमुट्+अच्युतः
3. 'यथासंख्यम्' से नकार के बाद स्वर को नुट्— सन्+नुट्+अच्युतः
4. नुट् में से 'न्' शेष रहा— सन्+न्+अच्युतः
5. इन सबको संयुक्त करने बना— 'सन्नच्युतः'

21. काँस्कान्, कांस्कान् = कान् + कान्

1. 'तस्य परमाम्रेडितम् से दूसरे कान् की आम्रेडित संज्ञा— कान् + कान्
2. 'कानाम्रेडिते से प्रथम् कान् के नकार को रु (र) — कार् + कान्
3. 'अत्रानुनासिकः' से अनुनासिक आदेश— काँर् + कान्
4. 'अनुनासिकात्' से अनुस्वार का आगम— काँर् + कान्
5. 'खरवसानयोः से रकार को विसर्ग— काँः+कान् एवं कांः+कान्
6. 'सम्पुंकानां' से विसर्ग के स्थान पर सकार— काँस्+कान् एवं कांस्+कान्
7. दोनों को संयुक्त करने पर बना— 'काँस्कान् एवं कांस्कान्'

22. शिवच्छाया = शिव + छाया

1. 'शिवस्य छाया' इस विग्रह से यहाँ षष्टी तत्पुरूष समास है तथा ह्रस्व अकार से परे छकार है— शिव + छाया
2. 'छे च' सूत्र से अकार के बाद तुक् (त) हुआ— शिवत् + छाया
3. 'झलां जशोऽन्ते' से तकार को दकार हुआ— शिवद् + छाया
4. 'स्तोः श्चुना श्चुः' से दकार को जकार हुआ— शिवज् + छाया
5. 'खरि च' से जकार को चकार हुआ— शिवच् + छाया
6. संयुक्त करने पर— 'शिवच्छाया'

23. लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया = लक्ष्मी + छाया

1. पदान्त दीर्घ ईकार के पश्चात् छकार का आगम— लक्ष्मी + छाया
2. 'पदान्ताद्वा' सूत्र से ईकार के बाद तुक् (त) हुआ— लक्ष्मीत् + छाया
3. 'झलां जशोऽन्ते' से त् को द् हुआ— लक्ष्मीद् + छाया
4. 'स्तोः श्चुना श्चुः' से द् को ज् हुआ— लक्ष्मीज् + छाया
5. 'खरि च' से ज् को च् — लक्ष्मीच् + छाया
6. संयुक्त करने पर— 'लक्ष्मीच्छाया'
7. तुक् आगम के अ□ाव पक्ष में— 'लक्ष्मीछाया'

16.7 बोध प्रश्न

1. हल् सन्धि से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट करें।
2. हल् संधि के मुख्य कितने □द पढ़े गये।
3. श्चुत्व सन्धि का अर्थ बताईये।

4. ष्टुत्व सन्धि किसे कहते हैं?
5. अनुस्वार किसे कहते हैं ? समझाइये।
6. निम्न सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजियेः–

1.	स्तोः श्चुना श्चुः’	2.	ष्टुना ष्टुः
3.	झलां जशोऽन्ते	4.	झलां जश् झशि
5.	तोर्लि	6.	खरि च
7.	मोऽनुस्वारः	8.	अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः
9.	समः सुटि	10.	खरवसानयोः विसर्जनीयः
11.	छे च		

7. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि विग्रह एवं सन्धि पद की सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए।

1.	रामश्शेते	2.	रामश्चिनोति
3.	सच्चित्	4.	शाङ्गिञ्जयः
5.	रामष्षष्ठः	6.	रामष्टीकते, तट्टीका
7.	षट्सन्तः	8.	वागीशः
9.	एतन्मुरारिः	10.	तल्लयः
11.	विद्वाँल्लिखति	12.	उत्थानम्
13.	वाग्घरिः	14.	तच्छिवः
15.	हरिं वन्दे	16.	यशांसि
17.	शान्तः	18.	सम्राट्
19.	षट्त्सन्तः	20.	सन्त्सः
21.	सन्नच्युतः	22.	शिवच्छाया
23.	लक्ष्मीच्छाया		

16.8 उपयोगी पुस्तकें

लघुसिद्धांत कौमुदी– वरदराज आचार्य

टीकाएँ–1. श्री भीमसेन शास्त्री

2. श्री महेश सिंह कुशवाहा
3. श्री धरानंद शास्त्री
4. डॉ0 बाबूराम त्रिपाठी
5. डॉ0 अर्कनाथ चौधरी